जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

के तत्वाधान में

"IQAC" एवं "हिन्दी विभाग"

द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार

हिंदी : अपार सम्भावनाओं का क्षेत्र

तिथि : 2 मई ,2020

समय: 11 बजे से 12 बजे दोपहर

वक्ता

प्रो० अनिल राय

वरिष्ठ समालोचक व प्रोफेसर

(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)

वक्ता

सुश्री सीमा भगत वर्मा

सीनियर असिस्टेंट एडिटर

(The Hindu, समाचार पत्र)

प्रारम्भिक वक्तव्य : डॉ० स्वाति पाल (प्राचार्या)

समायोजन: डॉ० संध्या गर्ग

सम्पर्क सूत्र: 99100 02791

आप सभी आमंत्रित हैं ।

दिनांक- 31 जुलाई 2021 (शनिवार)
विषय- प्रेमचंद का पुनराख्यान

दिनांक- 31 जुलाई 2021 (शनिवार)
विषय- प्रेमचंद का पुनराख्यान

वक्ता- प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी
प्रो. रामचंद्र

शनिवार, 31 जुलाई 2021 को जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज के हिंदी विभाग द्वारा प्रेमचंद जयंती पर 'प्रेमचंद का पुनराख्यान' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।इस संगोष्ठी का संचालन करते हुए डॉ. रजनी अनुरागी ने कथाकार प्रेमचंद पर समग्रता से विचार करने की आवश्यकता पर बल दिया। प्राचार्या प्रो. स्वाति पाल ने अतिथि वक्ताओं, प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी एवं प्रो. रामचंद्र का स्वागत किया। श्रीमती मीनाक्षी ने दोनों माननीय वक्ताओं का परिचय सभा से कराया।
प्राचार्या प्रो. स्वाति पाल ने स्वयं प्रेमचंद की कई कहानियों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया हुआ है।
हमारे पहले वक्ता प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी ने व्याख्यान का आरंभ करते हुए बताया कि प्रेमचंद एक उपन्यासकार होने के साथ एक बहुत बड़े आलोचक भी रहे हैं। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्षीय भाषण में प्रेमचंद ने कहा था "हमने जिस युग को अभी पार किया है उसका जीवन से कोई मतलब ना था।" प्रेमचंद पूंजीवाद के सबसे बड़े आलोचक रहे हैं। प्रेमचंद का मानना था कि 'साहित्य का उद्देश्य जीवन की आलोचना है'। प्रो. जगदीश्वर ने आगे बताया कि अगर लेखक के पास ऊंचे आदर्श नहीं तो वह साहित्य को ऊंचा नहीं ले जा सकता। सिर्फ यथार्थ का चित्रण महत्वपूर्ण नहीं, आलोचना भी महत्वपूर्ण है और आलोचना कैसे की जाती है यह हमें प्रेमचंद जी से सीखना चाहिए।

प्रो. रामचंद्र ने अपने व्याख्यान की शुरुआत करते हुए बताया प्रेमचंद जी के लिए धर्म ही न्याय था। प्रेमचंद को दलित संदर्भ में गलत प्रस्तुत करने की कोशिश की गई। प्रेमचंद को चुनौती के रूप में दलित लेखकों के सामने खड़ा कर दिया गया ताकि दोनों में फूट डाली जा सके। प्रेमचंद बहस का केंद्र बन गए। दलित आलोचकों ने प्रेमचंद को पुनः जीवित किया है। प्रो. रामचंद्र ने गहरी बात के साथ अपना व्याख्यान समाप्त किया। उन्होंने कहा कि 'लेखकों में सच कहने का साहस नहीं है क्योंकि वह विचारों का जोखिम नहीं उठा सकते।'
व्याख्यान के बाद प्रो.जगदीश्वर और प्रो. रामचंद्र ने छात्राओं के प्रश्नों का उत्तर दिया।
प्राचार्या प्रो. स्वाति पाल ने वक्ताओं को सुनकर उनकी बात से सहमति जताते हुए कहा कि प्रेमचन्द को सिर्फ पढ़ना काफी नहीं है उनके विचारों को जीवन में उतारना भी आवश्यक है। इस व्याख्यान को सुनने के लिए दिल्ली विश्वविद्याल और दिल्ली विश्वविद्यालय के बाहर से भी शिक्षक , शोधार्थी और छात्र-छात्राएं जुड़े।
इस संगोष्ठी के अंत में विभाग प्रभारी औरजीन मैरी ने सबका धन्यवाद ज्ञापन किया। इस सफल व्याख्यान की संचालक औरजीना मैरी, डॉ. रजनी अनुरागी और मीनाक्षी रहें।

हिन्दी विभाग
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

द्वारा आयोजित वेबिनार

विषय- प्रेमचंद का पुनराख्यान

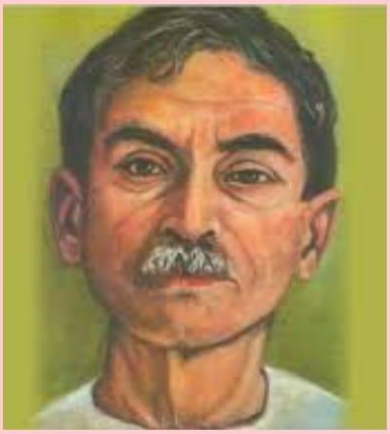

वक्ता- प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी
प्रो. रामचंद्र

दिनांक- **31** जुलाई **2021**

समय- 3:00 बजे प्लेटफार्म- ज़ूम ऐप

लिंक- https://us06web.zoom.us/j/87110175898?pwd=b0xwcXRHbDVIanJVMDBVZDRDT1Z3QT09

संयोजक-
औरजीना मैरी (विभाग प्रभारी)
डॉ. रजनी अनुरागी
मीनाक्षी

प्रो. स्वाति पाल
प्राचार्या